''सज्जन व्यक्ति वह है जो ज्ञान को फैलाता है''

- युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, 30 जून।

''छह प्रकार की लेश्याओं में तीसरे प्रकार की कपोत लेश्या का वर्णन करते हुए युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि कपोत लेश्या जिस व्यक्ति में होती है वह व्यक्ति मिथ्या दृष्टिकोण वाला होता है और उसमें सज्जनता नहीं होती वह दुर्जन व्यक्ति होता है।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कपोत लेश्या वाले दुर्जन व्यक्ति की चर्चा करते हुए फरमाया कि जो दुर्जन होता है उसके पास ज्ञान है तो व्यक्ति कुतर्क करने वाला होता है। जबकि सज्जन व्यक्ति की पहचान होती है कि ज्ञान को फैलाने का प्रयास करेगा। वह यह सोचेगा कि मेरे पास ज्ञान है और यह मेरे पास ही न रह जाए इसलिए उसे वह प्रसारित करने का प्रयास करेगा।

युवाचार्यश्री ने कहा कि यदि दुर्जन व्यक्ति के पास धन है तो वह उसका सही उपयोग नहीं करेगा उसका गलत उपयोग करेगा, अहंकार करेगा जबकि सज्जन व्यक्ति धन का उपयोग सद्कार्यों में करेगा, दान देने का प्रयास करेगा धन का अहंकार नहीं करेगा।

युवाचार्यश्री ने आचार्य भिक्षु के एक कथन को उद्घाटित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु के शब्दों में वह व्यक्ति दरिद्र होता है जिसके पास धन होते हुए भी वह कंजूस है वह व्यक्ति दरिद्र जैसा होता है। उसके लिए धन भार बना हुआ रहता है।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने यह भी कि एक सज्जन व्यक्ति के पास बल है तो वह दूसरों की सेवा करेगा, रक्षा करेगा, जबकि दुर्जन व्यक्ति लड़ाई करेगा। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति दुर्जनता को छोड़े और सही दिशा में प्रस्थान कर अपने अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करे तो उसका वर्तमान जीवन और आगे का जीवन भी अच्छा बन सकता है।